कई करत ले कैद में, बांधत उलटे बंध।
मारते अरवाह काढ़हीं, ए खेल या सनंध।। ३० ।।

किसी को कैद में डालते हैं। कई उनके बन्धन में बंध जाते हैं, जिनको मार-मारकर प्राण निकालते हैं। यह खेल इस तरह का है।

जीते हरखे पौरसे, उमंग अंग न माए।
हारे सारे सोक पावें, तोबा तोबा करें जुबांए।। ३१ ।।

कोई जीतने पर खुशी मनाता है और उसके अंग में उमंग नहीं समाती है। हारे हुए लोग शोक मनाते हैं तथा तोबा-तोबा करते हैं।

कई फिरत हैं रोगिए, कई लूले टूटे अपंग।
कई मिने आंधले, यों होत खेलमें रंग।। ३२ ।।

कई रोगी घूमते हैं। कई लूले, टूटे, अपंग हैं। कई अन्धे हैं। इस तरह से खेल में कई रंग हैं।

कई उदर कारने, फिरत होत फजीत।
पवाड़े कई बिना हिसाबें, खेल होत या रीत।। ३३ ।।

कई अपने पेट के लिए मांगते फिरते हैं और अपनी फजीहत कराते हैं। इस तरह से खेल में बिना हिसाब के झंझट हैं।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ३०१ ॥

सनन्ध–खेल में खेल की

अब गुझ बताऊं खेल का, झूठे खेले कर सांच।
ए नीके देखो मोमिनों, ए जो रहे मजहबों रांच।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं, हे मेरे प्यारे मोमिनो! इस खेल की गुझ (छिपी) बातें बताती हूं जिसमें लोग झूठ को सत समझ रहे हैं। यह तुम अब अच्छी तरह से धर्म, पन्थ, पैंडों में देखना।

मैं बताऊं या बिध, जासों जाहेर सब होए।
नहीं पटंतर दीन पैंडे, सो जुदे कर देऊं दोए।। २ ।।

मैं इस तरह से बताती हूं जिससे सब कुछ जाहिर हो जाए। धर्मों के अन्दर देखने में भेद दिखाई नहीं देता। वह मैं अलग-अलग करके बताती हूं।

इन खेल में जो खेल है, सो केहेत न आवे पार।
इन भेखों में भेख सोभहीं, सो कहूं नेक विचार।। ३ ।।

इस खेल में जो खेल हो रहा है, वह अपार है। यह कहनी से परे है। भेषों में तरह-तरह के भेष भी दिखाई पड़ते हैं। कुछ थोड़ा-सा उनके प्रति विचार सुनो।

कई बिना हिसाबे द्योहरे, जुदे जुदे अपने मजहब।
कई भांतों कई जिनसों, करत बंदगी सब।। ४ ।।

यहां बिना हिसाब मन्दिर बने हैं और अलग-अलग मजहब हैं। कई तरह से सब बन्दगी करते हैं।

Nijanand App

खोजे कोई न पावहीं, वार न पाइए पार।
ले बुत बैठावें द्योहरे, कहें हमारा करतार।।५ ।।

कोई-कोई खोज करते हैं पर वार-पार नहीं मिलता है (भवसागर से पार परमात्मा का ज्ञान)। वह मूर्ति को मन्दिर में बिठाते हैं और कहते हैं यही हमारे भगवान हैं।

कई सराए अपासरे, कई ताल कुंड बिरबाव।
कई बिध बांधे बेरखे, कई साल पोसाल टिकाव।।६ ।।

यहां कई धर्मशालाएं हैं। कई जैनों के अपासरे (मन्दिर) हैं, कई तालाब हैं, कई कुण्ड हैं, कई बावली हैं, कई तरह के झण्डे लगे हैं, कई साधुओं के ठहरने की शालाएं हैं तथा कई औषधालय हैं, कई ठहरने के ठिकाने हैं (रैनबसेरे हैं)।

कई अंन नीर सबीले, कई करें दया दान।
कई तरपन तीरथ, कई करे नित अस्नान।।७ ।।

कई अन्न क्षेत्र खोलते हैं, कई प्याऊ बनवाते हैं, कई दया, दान करते हैं, कई तीर्थों में जाकर पिण्डों का तर्पण करते हैं (पिण्डदान) कई जाकर तीर्थों में नित्य नहाते हैं।

कई भेख जो साध कहावहीं, कई पंडित पुरान।
कई भेख जो जालिम, कई मूरख अजान।।८ ।।

कई ऐसे भेष पहनते हैं कि लोग उन्हें साधु कहते हैं। कई पुराण पढ़ने वाले पण्डितों का भेष धारण करते हैं। कई डाकुओं का भेष धारण करते हैं। कई मूर्ख, नासमझ घूमते हैं।

कई कहावें दरसनी, धरें जुदे जुदे भेख।
सुध आप न पार की, हिरदे अंधेरी विसेख।।९ ।।

कई दर्शनशास्त्री कहलाते हैं। वह अलग-अलग भेष धरते हैं। उन्हें न अपनी खबर है और न ब्रह्माण्ड के पार की खबर है। उनका हृदय अन्धेरे से भरा हुआ है।

कई लोचें कई मूड़ें, कई बढ़ावें केस।
कई काले कई उजले, कई धरें भगुए भेस।।१० ।।

कई बालों को नुचवाते हैं, कई मुंडवाते हैं, कई लोग केश रखवाते हैं। कई काले हैं, कई गोरे हैं, कई भगवा वस्त्र धारण करके घूमते हैं।

कई नेक छेदें कई न छेदें, कई बहुत फारें कान।
कई माला तिलक धोती, कई धरे बैठे ध्यान।।११ ।।

कई कान छिदवाते हैं, कई नहीं छिदवाते हैं। कई कानों को बहुत फाड़ते हैं। कई माला पहनते हैं। कई तिलक लगाते हैं। कई धोती पहनते हैं। कई ध्यानी हो बैठते हैं।

कई लंगरी बोदले, कई सेख दुरवेस।
कई इलम कई आलम, कई पढ़े हुए पेस।।१२ ।।

इनमें कई लंगरी, कई बोदले, कई शेख, कई फकीर, कई आलिम फाजिल तथा कई पढ़ाई के पेशे के लोग हैं।

Nijanand App

कई जिंदे गोस कुतब, कई मलंग मीर पीर।
कई औलिए कई अंबिए, कई मिने फकीर।। १३ ।।

कई जिन्द, कई गौस, कई कुतुब, कई मलंग, कई मीर, कई पीर, कई औलिया, कई अम्बिया और कई फकीरों के रूप में घूमते हैं।

कई पैगंमर आदम, कई फिरे फिरस्ते फेर।
तबक चौदे देखिए, किन ठौर न छोड़ी अंधेर।। १४ ।।

कई पैगम्बर, कई आदम, कई फरिश्तों के रूप बनाकर घूमते हैं। चौदह लोकों में देखें तो इनमें से किसी को भी माया ने छोड़ा नहीं है (ऊपर के सब नाम मुसलमान साधुओं के हैं)।

कई सीलवंती सती कहावहीं, कई आरजा अरधांग।
जती वरती पोसांगरी, ए अति सोभावें स्वांग।। १५ ।।

कई शीलवती, कई सती कहलाती हैं। कई पतिव्रता अर्द्धाङ्गिनी कहलाती हैं। कई यती हैं, कई व्रती हैं, कई नशा करने वाले हैं। इसी तरह से सब रूप दिखाई पड़ते हैं।

कई जुगते जोगी जंगम, कई जुगते सन्यास।
कई जुगते देह दमें, पर छूटे नहीं जम फांस।। १६ ।।

कई तरह के योगी हैं। कई तरह के संन्यासी हैं। कई तरह के देह दमन करने वाले हैं। कई चलते फिरते योगी हैं, पर किसी से यम की फांसी नहीं छूटती। सब माया में उलझे पड़े हैं।

कई सिवी कई वैष्णवी, कई साखी समरथ।
लिए जो सारे गुमाने, सब खेलें छल अनरथ।। १७ ।।

कई शिव को मानने वाले हैं। कई विष्णु के उपासक हैं। कई कविता लिखने वाले कवि सन्त हैं। यह सब अपने अहंकार में डूबे हुए माया का ही खेल खेल रहे हैं।

कई श्रीपात ब्रह्मचारी, कई वेदिए वेदांत।
कई गए पुस्तक पढ़ते, परमहंस सिधांत।। १८ ।।

कई श्रीपाद (लक्ष्मीजी के उपासक) ब्रह्मचारी, कई वेद पढ़ने वाले वेदान्ती हैं। कई पुस्तक पढ़ते-पढ़ते परमहंसों के सिद्धान्त तक पहुंचे हैं।

अनेक अवतार तीर्थंकर, कई देव दानव बड़े बल।
बुजरक नाम धराइया, पर छोड़े न काहूं छल।। १९ ।।

कई विष्णु के अवतार हुए हैं। कई जैन मत के तीर्थंकर, कई देव और शक्तिशाली दानव हैं। कई बड़े बुजरक कहलाते हैं, पर किसी को माया ने नहीं छोड़ा।

कई होदी बोदी पादरी, कई चंडिका चामंड।
बिना हिसाबे खेलहीं, जाहेर छल पाखंड।। २० ।।

कई होदी हैं, कई बोदी, कई पादरी हैं (यह ईसाई मत के साधु हैं)। कई चण्डी देवी के उपासक हैं। कई चामुण्डा के उपासक हैं। इस तरह से बिना हिसाब के लोग इसमें खेलते हैं, पर है यह सब छल और पाखण्ड।

Nijanand App

कई डिंभ करामात, कई जंत्र मंत्र मसान।
कई जड़ी मूली औखदी, कई गुटका धात रसान।। २१ ।।

कई पाखण्डी करामाती (चमत्कारी) हैं। कई यन्त्र, मन्त्र से मसान की पूजा करते हैं। कई साधु जड़ी, मूल, औषधि की दवाई देते हैं। कई रस, धातु पदार्थों की गोलियां बांटते हैं।

कई जुगतें सिध साधक, कई व्रत धारी मुन।
कई मठ वाले पिंड पाले, कई फिरे होए नगन।। २२ ।।

कई सिद्ध और साधक बनकर घूमते हैं। कई व्रत धारण करके मौन रहते हैं। कई मठाधीश बनकर पिण्ड पालते हैं। कई जैन मुनि बनकर नंगे घूमते हैं।

कई खट चक्र नाड़ी पवन, कई अजपा अनहद।
कई त्रिवेनी त्रिकुटी, जोती सोहं राते सब्द।। २३ ।।

कई छः चक्रों से नाड़ी शोधन करते हैं। कई अजपा अनहद का जाप करते हैं। कई चित्त को त्रिकुटि में स्थिर करते हैं। कई ज्योति स्वरूप ओउम्, सोऽम् शब्दों का आनन्द लेते हैं।

कई संत जो महंत, कई देखीते दिगंमर।
पर छल ना छोड़े काहूं को, कई कापड़ी कलंदर।। २४ ।।

कई सन्त हैं, कई महन्त हैं, कई नंगे हैं, कई श्वेताम्बर जैन हैं, पर माया ने किसी को नहीं छोड़ा।

कई आचारी अप्रसी, कई करे कीरंतन।
यों खेलें जुदे जुदे, बस परे सब मन।। २५ ।।

कई आचार-विचार, छुआ-छूत को मानने वाले हैं। कई कीर्तन करने वाले हैं। यह सब लोग अलग-अलग रूप से मन के वशीभूत होकर खेलते हैं।

कई कीरंतन करें बैठे, कई जाग जगन।
कई कथें ब्रह्म ग्यान, कई तपे पंच अगिन।। २६ ।।

कई बैठे-बैठे कीर्तन करते हैं। कई रात्रि जागरण करते हैं। कई ब्रह्म ज्ञान का कथन करते हैं। कई पांच तरह की अग्नि में अपने को तपाते हैं।

कई इंद्री करें निग्रह, मन ल्याए कष्ट मोह।
कई ऊर्ध ठाड़ेश्वरी, कई बैठे खुद होए।। २७ ।।

कई इन्द्रियों को वश में करते हैं और कई लोग मोह के वश में कष्ट उठाते हैं। कई उलटे खड़े रहते हैं। कई खुद को ही ब्रह्म कहलाते हैं।

कई फिरें देस देसांतर, कई करें काओस।
कई कपाली अघोरी, कई लेवें ठंढ पाओस।। २८ ।।

कई देश-विदेश में घूमते हैं। कई काओस (ओस में बैठकर) उपासना करते हैं। कई कापालिक (मुर्दे की खोपड़ी लेकर घूमने वाले) अघोरी, कई म्लेच्छों का खाना खाते हैं। कई ठण्ड के मौसम में छाती तक पानी में डूबे रहते हैं।

कई पवन दूध आहारी, कई ले बैठत हैं नेम।
कई कैद ना करे कछुए, ए सब छल के चेन।। २९ ।।

कई हवा खाते हैं। कई दूध पीते हैं तथा नियम पालन करते हैं। कई कर्मकाण्ड करते हैं। कई कुछ नहीं करते। यह सब छल और कपट के चरित्र हैं।

Nijanand App

कई फल फूल पत्र भखी, कई आहार अलप।
कई करें काल की साधना, जिया चाहें कलप।। ३० ।।

कई फल खाते हैं। कई फूल खाते हैं। कई पत्ते खाने वाले हैं। कई थोड़ा खाने वाले हैं। कई काल की साधना करके कल्पान्त तक मरना नहीं चाहते।

कई धारा गुफा झांपा, कई जो गालें तन।
कई सूकें बिना खाए, कई करें पिंड पतन।। ३१ ।।

कई पानी की धारा के नीचे बैठे हैं। कई गुफाओं के अन्दर हैं। कई आग में अपने तन को जला रहे हैं। कई भूखे मर कर सूख रहे हैं। कई इस तरह अपने शरीर को नष्ट करने में लगे हैं।

यों वैराग जो साधना, कई जुदे जुदे उपचार।
यों चलें सब पंथ पैंडे, खेले सब संसार।। ३२ ।।

कई वैराग्य साधना करते हैं। कई तरह-तरह के उपचारों में लगे हैं (दवाई ढूंढ़ते फिरते हैं)। इसी तरह से सभी पन्थ पैंडे चल रहे हैं। इस पर चलकर सब संसार में खेल खेल रहे हैं।

खेले सब देखा देखी, ज्यों चले चींटी हार।
यों जो अंधे गफलती, बांधे जाए कतार।। ३३ ।।

यह सब चींटी की हार की तरह देखा-देखी चलते हैं। इस तरह से यह अन्धे गफलत में डूबे हुए एक पंक्ति में चले जा रहे हैं।

कोई ना चीन्हें आप को, ना सुध अपनो घर।
जिमी न पैंडा सूझे काहू, जात चले या पर।। ३४ ।।

किसी को भी न अपनी पहचान है और न अपने घर की पहचान है। किसी को भी इस भवसागर से पार जाने का रास्ता दिखता नहीं है, पर चले जा रहे हैं।

बाजीगर न्यारा रह्या, ए खेलत कबूतर।
तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर।। ३५ ।।

इस संसार के रचने वाले बाजीगर की पहचान नहीं है। यह सब खेल के कबूतर की तरह खेल रहे हैं। जैसे खेल के कबूतरों को बाजीगर की पहचान नहीं होती, उसी प्रकार इनको परमात्मा की पहचान नहीं है।

आपे नाम जुदे जुदे, खुदा के धरे अनेक।
अनेक रंगे संगे ढ़ंगे, बादे करे विवेक।। ३६ ।।

इन्होंने अपनी ही तरफ से परमात्मा के अनेक नाम रख लिए हैं। अनेक तरह से आपस में वाद-विवाद (शास्त्रार्थ) करते हैं।

सुध इनको तो परे, जो ए आप सांचे होए।
तो कुरान के माएने, इत खोल ना सके कोए।। ३७ ।।

इनको पारब्रह्म की पहचान तब हो जब यह स्वयं बेहद के हों, इसलिए आज दिन तक कुरान के मायने कोई खोल नहीं सका।

Nijanand App

ए देखो तुम मोमिनों, खेल बिना हिसाब।
ए खेल तुम खातिर, खसमें रचिया ख्वाब।। ३८ ।।

हे मोमिनो! देखो, यह खेल इस तरह से बेहिसाब है जो तुम्हारे लिए अपने धनी ने सपने में बनाया है।

मोमिनों के मेले मिने, कोई आए न सके रूह ख्वाब।
ए ख्वाब नीके पेहेचानियो, ज्यों होवे दीन सवाब।। ३९ ।।

मोमिनों के मेले में सपने का कोई जीव नहीं आ सकता, इसलिए इस सपने के संसार को अच्छी तरह से पहचानना जिससे तुम्हें दीन का लाभ मिले।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ३४० ।।

सनन्ध–जुदे जुदे फिरकों की जिद

अजूं देखाऊं नीके कर, ए जो खैंचा खैंच करत।
ए झूठे झूठा राचहीं, पर सुध न काहूं परत।। १ ।।

हे मेरे मोमिनो! अब मैं तुम्हें इन सब धर्म, पन्थों की खींच-तान बताती हूं। यह सब झूठ में रंगे हैं और किसी को भी पार की सुध नहीं है।

खेल खेलें और रब्दें, मिनो मिने करें क्रोध।
जैसे मछ गलागल, छोड़े ना कोई व्रोध।। २ ।।

इस खेल में खेलते हैं और आपस में क्रोधित होकर झगड़ा करते हैं। जिस तरह से मगरमच्छ आपस की दुश्मनी नहीं छोड़ते, उसी तरह इनका हाल है।

कोई कहे दान बड़ा, कोई कहे ग्यान।
कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लरे सब उनमान।। ३ ।।

कोई दान, कोई ज्ञान, कोई विज्ञान को बड़ा कहते हैं और अटकल लगाकर लड़ते हैं।

कोई कहे करम बड़ा, कोई केहेवे काल।
कोई कहे साधन बड़ा, यों लरें सब पंपाल।। ४ ।।

कोई कर्म को, कोई काल को तथा कोई साधन को बड़ा कहकर झूठ में लड़ते रहते हैं।

कोई कहे बड़ा तीरथ, कोई कहे बड़ा तप।
कोई कहे सील बड़ा, कोई केहेवे सत।। ५ ।।

कोई तीर्थ को, कोई तप को, कोई शील को, कोई सत को बड़ा कहता है।

कोई कहे विचार बड़ा, कोई कहे बड़ा व्रत।
कोई केहेवे मत बड़ी, या विध कई जुगत।। ६ ।।

कोई विचार को, कोई व्रत को, कोई बुद्धि को तथा कोई युक्ति को बड़ा कहते हैं।

कोई कहे बड़ी करनी, कोई कहे मुगत।
कोई कहे भाव बड़ा, कोई कहे भगत।। ७ ।।

कोई करनी, कोई मुक्ति, कोई भाव तथा कोई भक्ति को बड़ा कहते हैं।

Nijanand App